॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ४ जुलाई २००४

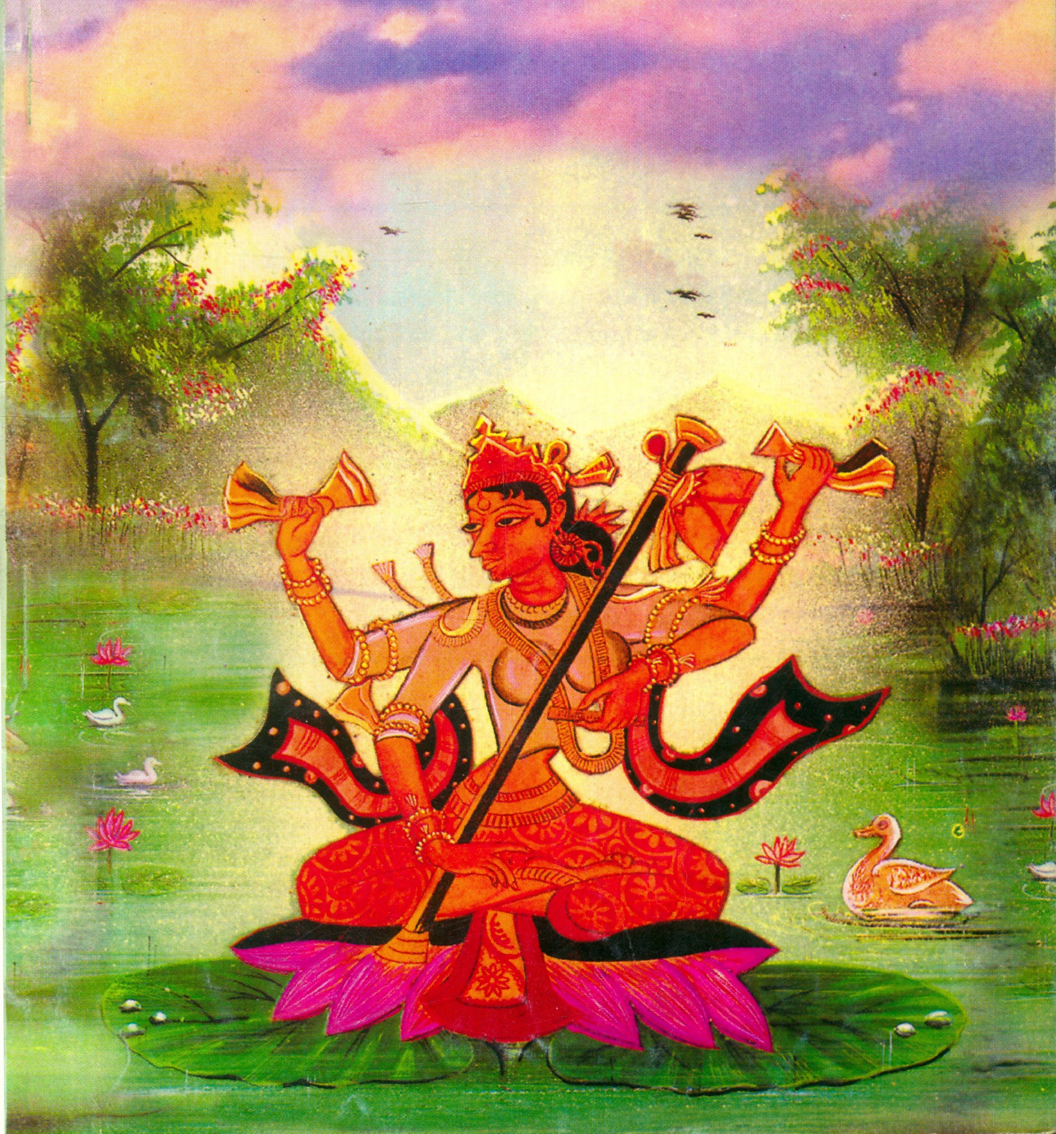

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - ४, जुलाई, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	संवेगरंगशाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि (प्रथम) का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	साध्वी प्रियदिव्यांजना श्री	१६१
२.	समाधि-मरण	डॉ० जीवराज जैन	१६७
३.	पाड़ा का देवालय :	श्री सुभाष राय	१७९
४.	श्रीचन्द्रराज चरित्र		१८३

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

संवेगरंगशाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि (प्रथम) का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साध्वी प्रियदिव्यांजना श्री

जिनचन्द्रसूरि और उनकी कृति संवेगरंगशाला :-

सामान्य रूप से सभी धर्मों में और विशेष रूप से जैनधर्म में वैराग्य को प्रधानता दी गई है। जैन-परम्परा में वैराग्य के लिए संवेग और निर्वेद शब्दों का प्रयोग उपलब्ध होता है। संवेग का तात्पर्य है- इच्छा और आकांक्षाओं से उत्पन्न तनावों को दूरकर क्रोध, मान, माया और लोभरूप कषायों के आवेग से मुक्त रहना। इस प्रकार संवेग शब्द वैराग्य का ही पर्यायवाची है। जिनचन्द्रसूरि की संवेगरंगशाला नामक कृति वस्तुतः वैराग्य प्रधान कृति है। इस कृति का मुख्य प्रयोजन व्यक्ति को भोगाशक्ति से ऊपर उठाकर त्याग और वैराग्य के मार्ग में प्रवृत्त करता है। इसी उदेश्य से प्रस्तुत कृति में वैराग्य प्रधान उपदेशों और कथाओं को प्रस्तुत किया गया है। कृति का नामकरण संवेगरंगशाला इस प्रयोजन से किया गया है कि वह वैराग्य हेतु रंगमंच प्रस्तुत करती है।

संवेगरंगशाला मुख्यतः साधना या आराधना प्रधान कृति है। इस कृति में लेखक ने साधना या आराधना को दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम विभाग के अन्तर्गत उन्होंने गृहस्थ जीवन और मुनि जीवन की सामान्य आराधना पद्धति का चित्रण किया है और उसके पश्चात् जीवन के अन्तिम चरण में अन्तिम आराधना या समाधिमरण की साधना किस प्रकार की जाए, इसका उल्लेख किया गया है। यदि हम इस कृति की गम्भीरता पर विचार करते है, तो यह कृति मुख्य रूप से अन्तिम आराधना या समाधिमरण की साधना से ही सम्बन्धित प्रतीत होती है।

संवेगरंगशाला के रचनाकार आचार्य जिनचन्द्रसूरि है। खरतर गच्छ में जिनचन्द्रसूरि नामके अनेक आचार्य हुए हैं। खरतरगच्छ में यह परम्परा

भी रही है कि उसमें हर चौथे आचार्य को जिनचन्द्रसूरि कहा गया है। इस आधार पर यह कठिनाई उत्पन्न होती है कि प्रस्तुत कृति के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि कौन से है? किन्तु जिनचन्द्र सूरि ने संवेगरंगशाला की ग्रन्थ प्रशस्ति में स्पष्ट रूप से इस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर दिया है। ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार संवेगरंगशाला के रचनाकार जिनचन्द्रसूरि ने अपने को वर्धमानसूरि का प्रशिष्य, बुद्धिसागरसूरि का शिष्य तथा नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरि का बड़ा गुरूभ्राता बताया है। जैन धर्म की श्वेताम्बर परम्परा की कोटिक गण की वज्रीशाखा के चन्द्रकुल में आचार्य वर्धमानसूरि हुए। वर्धमानसूरि के दो प्रमुख शिष्य- (१) जिनेश्वरसूरि और (२) बुद्धिसागरसूरि हुए। बुद्धिसागरसूरि के शिष्य संवेगरंगशाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि और नवांगीटीकाकार अभयदेवसूरि थे। इस प्रकार ग्रन्थ प्रशस्ति के आधार पर यह सिद्ध होता है कि संवेगरंगशाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि बुद्धिसागरसूरि के शिष्य थे। किन्तु कहीं-कहीं उन्हें जिनेश्वरसूरि का शिष्य भी कहा गया है। सम्भव है कि उन्हें दीक्षा जिनेश्वरसूरि ने प्रदान की हो अतः इस अपेक्षा से भी उन्हें जिनेश्वरसूरि का शिष्य भी माना जा सकता है, किन्तु संवेगरंगशाला की ग्रन्थ प्रशस्ति से यही सिद्ध होता है कि जिनचन्द्रसूरि जिनेश्वरसूरि के लघु गुरुभ्राता बुद्धिसागर सूरि के शिष्य थे, साथ ही प्रशस्ति से यह भी सिद्ध होता है कि जिनचन्द्रसूरि ने प्रस्तुत कृति की रचना अभयदेवसूरि के आग्रह पर की थी। अतः संवेगरंगशाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि, वर्धमानसूरि के प्रशिष्य एवं बुद्धिसागर सूरि के शिष्य थे। खरतरगच्छ परम्परा की अपेक्षा से वे प्रथम जिनचन्द्रसूरि है।

जिनचन्द्रसूरि के व्यक्तित्व का परिचय वस्तुतः उनकी प्रस्तुत कृति संवेगरंगशाला से ही हो जाता है। त्याग और वैराग्य के भावों से परिपूर्ण इस कृति का प्रणयन वही व्यक्ति कर सकता था, जिसका जीवन स्वयं त्याग से परिपूर्ण हो वस्तुतः जिनचन्द्रसूरि ने न केवल त्याग और वैराग्यपूर्ण इस कृति का प्रणयन किया था, अपितु वे स्वयं भी चैत्यवासी परम्परा से भिन्न संविग्न या सुविहित परम्परा में दीक्षित हुए थे। यदि उनकी जीवन दृष्टि सुख सुविधाओं का लाभ उठाने की होती, तो निश्चय ही वे संविग्न परम्परा में दीक्षित न होकर चैत्यवासी परम्परा में ही दीक्षित होते।

उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में हमें विशेष सूचनाएँ उपलब्ध नहीं होती हैं, किन्तु उनकी रचना, उनकी गुरु परम्परा और उनके धर्म-परिवार से हम उनके व्यक्तित्व का आंकलन कर सकते है। उनकी कृति और उनकी गुरु परम्परा से यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका व्यक्तित्व भोगवादी न होकर त्याग और वैराग्यप्रधान था। दूसरे जब हम उनके गुरुभ्राताओं और धर्म परिवार को देखते है, तो स्पष्ट रूप से यह भी प्रतीत होता है कि वे सभी अपने युग के विशिष्ट विद्वान रहे है। जहाँ उनके गुरू प्रसिद्ध वैयाकरणविद् थे, वहीं उनके गुरूभ्राता अभयदेवसूरि आगमिक परम्परा के विशिष्ट विद्वान थे। जिनचन्द्रसूरि की प्रस्तुत कृति से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वे आत्म साधक होने के साथ-साथ प्राकृत भाषा और साहित्य के ग़म्भीर अध्येता थे। संवेग और निर्वेद परक उनकी यह कृति स्वयं ही उनके व्यक्तित्व को उजागर कर देती है। लगभग १०,००० प्राकृत गाथाओं में निबद्ध यह कृति उनके जैन आगमों और जैन परम्परा के अनेक ग्रन्थों के व्यापक अध्ययन का ही परिणाम है।

जिनचन्द्रसूरि का सत्ता काल :-

जहाँ तक जिनचन्द्रसूरि के काल का प्रश्न है, उनकी संवेगरंगशाला नाम की कृति के आधार पर उनके काल का निर्धारण किया जा सकता है। संवेगरंगशाला एक बृहत् और वैराग्यरस से परिपूर्ण कृति है। ऐसा लगता है कि यह कृति उनकी प्रौढ़ अवस्था की रचना होगी। यही कारण है कि अपनी वृद्धावस्था के कारण वे इस कृति का संशोधन और परिमार्जन नहीं कर सके। उनके गुरूभ्रात और शिष्यों ने इसका संशोधन किया। यदि संवेगरंगशाला की कृति के समय उनकी आयु ७० वर्ष के लगभग भी मानें, तो उनका जन्म विक्रम संवत् की ११वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ होगा अतः उनका जीवन काल विक्रम की ११वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और १२वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक माना जा सकता है।

जिनचन्द्रसूरि की जीवनरेखा :-

दुर्भाग्य से जिनचन्द्रसूरि के सांसारिक जीवन के बारे में कोई भी

सूचना उपलब्ध नहीं है। अतः जिनचन्द्रसूरि के माता-पिता कौन थे? वे किस नगर में उत्पन्न हुए थे आदि के सम्बन्ध में कुछ भी कह पाना सम्भव नहीं है। ग्रन्थ की प्रशस्ति में यह उल्लेख है कि प्रस्तुत कृति की रचना छत्रावली नगर के पासनाग की बस्ती में विक्रम संवत् ११२५ में हुई थी और इस पुस्तक की प्रथम प्रतिलिपि जिनचन्द्रसूरि के शिष्य जिनदत्तगणि ने की थी। छत्रावली नगरी सम्भवतः वर्तमान छत्राल हो, जो उत्तर गुजरात में स्थित है। प्रशस्ति में यह भी कहा गया है कि प्रसन्नचन्द्रगणि की अभ्यर्थना पर संशोधित संवेगरंगशाला विक्रम संवत् १२०३ में बटवा नगर में जेष्ठ शुक्ला चतुर्दशी गुरुवार को लिपिबद्ध की गई। बटवा सम्भवतः अहमदाबाद के निकट स्थित बटवा हो। ग्रन्थ प्रशस्ति में जिन नगरों का उल्लेख है, उससे यही सिद्ध होता है कि इस ग्रन्थ की रचना गुजरात में हुई है।

जिनचन्द्रसूरि का धर्मपरिवार :-

चाहे जिनचन्द्रसूरि के गृहस्थ परिवार के सम्बन्ध में हमें कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं होती हो, किन्तु उनके धर्मपरिवार के सम्बन्ध में संवेगरंगशाला की प्रशस्ति एवं अन्य ग्रन्थों से बिखरी हुई कुछ जानकारियां उपलब्ध हो जाती है। खरतरगच्छ के आदिकालीन इतिहास में महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर यह लिखते है कि जिनेश्वरसूरि ने जिनचन्द्र, अभयदेव, धनेश्वर, हरिभद्र, प्रसन्नचन्द्र, धर्मदेव, सहदेव, सुमति आदि अनेक व्यक्तियों को दीक्षा देकर उन्हें अपना शिष्य बनाया, किन्तु संवेगरंगशाला की अन्तिम प्रशस्ति के अनुसार जिनचन्द्रसूरि जिनेश्वर सूरि के लघु भ्राता बुद्धिसागरसूरि के शिष्य थे।

जिनचन्द्रसूरि का कृतित्व :-

प्रस्तुत कृति के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि के कृतित्व के विषय में हमें विशेष जानकारी तो उपलब्ध नहीं होती है, मात्र उनके द्वारा की गई साहित्य सेवा के संबन्ध में यंत्र-तंत्र कुछ निर्देश अवश्य मिलते हैं। युगप्रधानाचार्य गुर्वावलि में यह उल्लेख है कि उन्हें अष्टादश नाममाला आदि अनेक ग्रन्थ कण्ठस्थ थे। जिनचन्द्रसूरि द्वारा रचित ग्रन्थों के सन्दर्भ में निम्न सूचनाएँ उपलब्ध होती है–

ऐसा कहा जाता है कि जवालीपुर (जालोर) में उन्होंने चैत्यवन्दनभावस्तव की जो व्याख्या प्रस्तुत की थी उसीके आधार पर उनके शिष्य ने ३०० श्लोक परिणाम श्रावकदिनचर्या नामक ग्रन्थ की रचना की थी। वर्त्तमान में यह कृति अनुपलब्ध है। केवल खरतरगच्छ पट्टावली से इसकी सूचना प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त पञ्चपरमेष्ठि नमस्कार कुलक, क्षपकशिक्षा प्रकरण, जीवविभक्ति, आराधना, पार्श्वस्तोत्र आदि कृत्तियां भी उनके द्वारा रचित मानी जाती है।

जिनचन्द्रसूरि की गच्छपरम्परा :-

जवेरी कान्तिलाल मणिलाल भाई मुम्बई के द्वारा विक्रम संवत् २०२५ में पत्राकार के रूप में प्रकाशित संवेगरंगशाला में संवेगरंगशाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि को तपागच्छीय उल्लेखित किया। यह सत्य है कि जिनचन्द्रसूरि नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरि के गुरूभ्राता है और यह भी सत्य है कि अभयदेवसूरि और जिनचन्द्रसूरि दोनों ही वर्धमानसूरि के प्रशिष्य जिनेश्वरसूरि के गुरुभ्राता बुद्धिसागरसूरि के शिष्य है। वर्धमानसूरि कोटिकगण की वज्रीशाखा के चन्द्रकुल से सम्बन्धित है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि वर्त्तमान में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में उपकेशगच्छ को छोड़कर शेष सभी गच्छ कोटिकगण की वज्रीशाखा से ही उत्पन्न हुए है। परम्परा के अनुसार तपागच्छ के संस्थापक जगतचन्द्रसूरि माने जाते है। जगतचन्द्रसूरि बृहत्‌गछीय (बड़गच्छ) आचार्य मणिरत्नसूरि के शिष्य रूप में दीक्षित हुए थे, किन्तु अपने गच्छ में व्याप्त शिथिलाचार को देखकर जगत्‌चन्द्र ने चैत्रगच्छीय आचार्य घनेश्वरसूरि के प्रशिष्य भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य देवभद्रगणि के पास पुनः दीक्षा ग्रहण की, और बारह वर्षों तक निरन्तर आयंबिल तप किया। जिससे प्रभावित होकर आघाटपुर के शासक जेत्रसिंह ने उन्हें विक्रम संवत् १२८५ में अर्थात् ई. सं. १२२९ में तपाविरूद्ध प्रदान किया। इसी आधार पर उनकी शिष्य परम्परा तपागच्छीय कहलाई। चैत्रगच्छीय धनेश्वरसूरि उनके प्रशिष्य देवभद्रगणि खरतरगच्छीय धनेश्वरसूरि और देवभद्रगणि से भिन्न थे। जहाँ खरतरगच्छ का प्रारम्भ दुर्लभराज की सभा में जिनेश्वरसूरि

को खरतरविरूद्ध देने के कारण हुआ, वहीं तपागच्छ का प्रादुर्भाव जैत्रसिंह के द्वारा जगत्चन्द्रसूरि को तपाविरूद्ध देने के कारण हुआ। यह तो सुस्पष्ट है कि जहाँ खरतरगच्छ का आविर्भाव विक्रम संवत् १०८० में हुआ, वहाँ तपागच्छ का आविर्भाव विक्रमसंवत् १२८५ में हुआ, अतः दोनों गच्छों के उद्भव काल में २०० वर्ष का अन्तर है। अभयदेवसूरि और उनके गुरुभ्राता जिनचन्द्रसूरि को चाहे तपागच्छीय आचार्य अपना पूर्व पुरुष मानें, किन्तु यह तो स्पष्ट है कि वे स्वयं तपागच्छीय नहीं हैं, क्योंकि तपागच्छ का प्रादुर्भाव उनके काल से भी लगभग १५० वर्ष पश्चात् हुआ। अतः संवेगरंगशाला के लेखक को तपागच्छीय कहना तो बिलकुल उचित नहीं है। चाहे वे तपागच्छीय परम्परा के भी पूर्व पुरुष माने जाए, किन्तु इस आधार पर उन्हें तपागच्छीय नहीं कहा जा सकता है। यदि ऐसा होगा तो फिर लोग अपने पूर्व पुरुष के रूप में महावीर को भी श्वेताम्बर या दिगम्बर या खरतरगच्छीय या तपागच्छीय कहने लगेंगे।

समाधि–मरण
(ज्योतिर्मय मृत्यु की साधना)

डॉ० जीवराज जैन

(पुर्वानुवृत्ति)

0.0 समाधि–मरण का महत्त्व

जैन धर्म में माना गया है कि मनुष्य के मरने की प्रक्रिया उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि मनुष्य के जन्म लेने की घटना महत्वपूर्ण है। यदि मनुष्य ने अपने अंतिम समय में श्रेष्ठ पंडित मरण का वरण कर लिया तो जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पाने में व शाश्वत सुखों को प्राप्त करने में काफी सफलता हासिल कर सकता है।

0.1 जीवन का लक्ष्य

महावीर मानते थे कि यदि मृत्यु ज्योतिर्मय है, तो जीवन भी ज्योतिर्मय बनेगा। महावीर जीवन और मृत्यु को अपना लक्ष्य नहीं मानते। वे अमरता-अमृत्यु को अपना लक्ष्य मानते है। उनकी दृष्टि में वह मृत्यु ही सच्ची मृत्यु है, जो अमरता का दरवाजा खोल दे। ऐसी मृत्यु में जीवन का निषेध नहीं है। जीवन का निषेध तो आत्महत्या है। महावीर आत्महत्या को सबसे बड़ा पाप मानते हैं। महावीर न तो जीवन के आकांक्षी है और न मृत्यु से भयभीत। यह सच है कि मृत्यु के बिना अमरता नहीं मिलती है। अमरता में छलांग मृत्यु के प्लेटफार्म से ही लगानी पड़ती है। इसलिए उनकी दृष्टि में मृत्यु मूल्यवान बन जाती है। दुनिया में शायद महावीर पहले व्यक्ति हैं, जो मृत्यु को पूरी व्यवस्था देते हैं। जब वह आए तो तुम सावधान रहना। इसलिए उन्होंने संथारा (अन्नत्याग) संलेखना, आलोचना आदि के रूप में बाकायदा मृत्यु को रेखांकित किया है। वे न तो जीवन की भीख मांगते है और न मृत्यु के सामने गिड़गिड़ाते हैं। बल्कि मौत का स्वागत करने के लिए

सामने खड़े मिलते है। इसका यह मतलब नहीं है कि वे जीवन के विरोधी हैं। वे तो जीवन को अधिक समर्थ-सार्थक बनाने के लिए संकेत देते हैं।

0.2 सुख नहीं, आनन्दानुभूति

मृत्यु के समय यदि आनन्द की अनुभूति होती हो तो अमरता सिद्ध होती है। महावीर दुखवादी नहीं हैं। वे यह नहीं कहते कि दुख का आलिंगन करो। पर वे यह भी नहीं कहते कि सुख का आलिंगन करो। वे कहते हैं- मरते समय यदि शांति से मरते हो तो मृत्यु से छुटकारा पा सकते हो। सामान्यतया आदमी मरते समय दुख से मरता है। महावीर न तो जीते समय सुख-दुख की बात करते हैं, न मरते समय। वे तो केवल आनन्द की बात कहते हैं। आनन्द प्राप्ति की जो साधना पद्धति है, उसको निर्जरा कहते हैं।

जहाँ तक मन में आनंद की अनुभूति हो, तब तक उपवास आदि निर्जरा का अभ्यास करो। जिस उपवास आदि निर्जरा की साधना में आनन्द की अनुभूति नहीं होती है, उसके लिए महावीर की अनुमति नहीं है। देह-दंड का विधान नहीं है, बल्कि देह, साधना करने का एक यान है। इस दृष्टि से, आनन्द भाव से मौत का स्वागत ही ज्योतिर्मय जीवन की अमरता सुनिश्चित करता है।

1. संलेखना व संथारा क्या है ?

संलेखना का अर्थ है शरीर-काया और मन के कषायों को अच्छी तरह कृश करना, पतला करना यानि कम करना। क्रोध, मान, माया और लोभ को कषाय कहा गया है। पाप-हिंसा व दुख का कारण इन्हीं चार कषायपूर्ण मनोवृत्ति में निहित है। इन्हीं से आवेष्टित होकर हमारा मन अशांत व विकृत अवस्था की ओर झुककर कलुषित होता रहता है। वैज्ञानिक परीक्षणों से भी पता चला है कि कषाय प्रवृत्तियां हमारी पाचन-क्रिया से लेकर, शरीर के अन्य आंतरिक अंगों व कोषों के रख-रखाव व मरम्मत की रसायन पद्धति तक को भी बुरी तरह से प्रभावित करती हैं–विकृत करती है।

अंतिम समय में संलेखना व्रत धारण करके नमस्कार मंत्र के स्मरण के साथ शांतिपूर्वक देह के त्याग करने को समाधि-मरण कहते हैं। इसी में मनुष्य को आनंद की अनुभूति होगी।

2. मरणांतिक समय का सुरक्षा कवच

जैन साधक मानव शरीर को अपनी साधना का अमूल्य साधन मानता हुआ, जीवन पर्यंत उसका अपेक्षित रक्षण करता है, रख रखाव करता है। किन्तु अत्यंत बुढ़ापा, इंद्रियों की शिथिलता, अत्याधिक दुर्बलता अथवा मरण के अन्य कोई कारण उपस्थित होने पर, जब शरीर उसके संयम में / साधना में साधक न होकर बाधक दिखने लगता है, तब उसे अपना शरीर तो विनष्ट होने पर भी पुनः मिल सकता है, लेकिन जो व्रत, संयम और धर्म मैंने धारण किये हैं, वो मेरे जीवन की अमूल्य निधि है। बड़ी दुर्लभता से मैंने इनको प्राप्त किया है। इनकी मुझे सुरक्षा करनी चाहिए। ताकि मुझे बार-बार शरीर धारण करना नहीं पड़े। और मैं अभीष्ट सुख को प्राप्त कर सकूं। यह सोचकर वह बिना किसी अवसाद के, प्रसन्नतापूर्वक आत्मचिंतन के साथ आहार आदि का क्रमशः व शनैः शनैः परित्याग कर देहोत्सर्ग करने को उद्यत होता है।

सभी प्रकार के विषाद को छोड़कर समतापूर्वक देह-त्याग करना ही संलेखना या समाधिमरण है। इसमें मन और इन्द्रिय निग्रह द्वारा काया का संवर तथा कर्म की निर्जरा की जाती है। कषाय को कम करने की साधना को **आभ्यांतर संलेखना** कहते हैं। शरीर को कृश करने के अभ्यास को **बाह्य संलेखना** कहते हैं। मन और काया को निर्मल बनाने में, बुद्धि की शुद्धि करने में व पूर्वकृत कर्मों की निर्जरा करने में **आभ्यांतर संलेखना** ज्यादा प्रभावी होती है। इसलिए इसका गौरव व महत्व सबसे अधिक है। बाह्य संलेखना तो वास्तव में आंतरिक संलेखना की साधना में सहयोगी/ मददगार सिद्ध होती है।

जीवन के आखिरी समय में आत्मा जब शरीर के आवरण से अलग होने की प्रक्रिया में आती है, उस समय यदि हम कषाय-भाव से बचने के लिए सुरक्षा-कवच पहन लें, यानि संलेखना कर लें, तो हम अल्प समय में कर्मों की घनिष्ट निर्जरा करने में सक्षम हो सकते हैं। ज्यादा निर्मल बन सकते हैं। ऐसे उर्ध्वगामी जीव के मरण को सकाम मरण कहते हैं। ध्यान देने

की बाद है कि केवल ज्ञानी और सुज्ञ मनुष्य ही ऐसा सफल तथा सकाम मरण प्राप्त करने में कामयाब होते हैं। संथारे को उस सुरक्षा-कवच की उपमा दी गई है, जो कवच युद्ध में प्रस्थान करते वक्त एक वीर जवान अपने प्राण बचाने के लिए संपूर्ण शरीर पर सहर्ष, स्वेच्छा से पहनकर युद्धभूमि पर जाता है। संलेखना के सुरक्षा कवच से पाप क्रिया तथा कषाय की मनोवृत्ति से आत्मा की रक्षा होती है।

3. संथारे के प्रकार :

संथारा दो तरह का होता है। एक सागारी **संथारा कहलाता** है और दूसरा जीवन-पर्यन्त **(मरणान्तिक) संथारा** कहलाता है। सागारी संथारा एक युद्धक हवाई उड़ान की तरह कुछ समय के लिए किया जाता है–यानि आगार रख कर किया जाता है। यह किसी भी परिस्थिति में शुभ और विनीत भाव रख कर लिया जाता है। खासकर उस परिस्थिति में, जब कि मनुष्य को किसी उपसर्ग, बिमारियों के संकट से अपने प्राण के बचने की आशा-संभावना रहती है। उपसर्ग टल जाने पर संलेखना समाप्त हो जाती है।

किन्तु जब परिस्थिति का आंकलन ऐसा हो कि सुज्ञ जन को बचने की संभावना नहीं लगती हो तो वे बिना किसी आगार के ही जीवन-पर्यन्त का संथारा कर लेते हैं। व्रतधारी पहले अन्न का त्याग करता है। जैसे-जैसे इच्छाशक्ति मजबूत होती है, पानी का भी त्याग कर देता है। भूख और प्यास की इच्छाओं पर विजय पाने के लिए वह स्वाध्याय तथा ध्यान में चला जाता है (कायोत्सर्ग)। वह सोचता है कि पिछले अनन्त जन्मों में उसने अनन्त मात्रा में अन्न और पानी का सेवन किया है। अनन्त कर्मों का उपार्जन कर आत्मा को मलिन किया 'ऐ आत्मा', तूने तीन लोक के पानी से ज्यादा पानी पिया, लेकिन तेरी प्यास नहीं बुझी। अतः अभी की काया की क्या प्यास बुझाना। तूने कई अनंत भव में गलत मरण का वरण किया। अब सही मरण का विचार करके, जरा और मरण के अंत करने का प्रयास कर। (कुंदकुंद स्वामी)। मन का संतुलन रखने के लिए उपासक भगवान् के प्रवचन पर ध्यान देता है। वह प्यास को बुझाने का रास्ता नहीं ढूंढ़ता है, बल्कि प्यास की आग को ध्यान के ठंडे व सुगन्धित विचारों से उसे शांत रखता है।

राष्ट्र संत विनोबा भावे का आखिरी संथारा इसी श्रेष्ठ श्रेणी का था। वह हम सबके लिए प्रेरणापद बन गया।

प्रकार मरण के :

मोटे तौर पर मरण दो प्रकार का माना गया है। पंडित-मरण व बाल-मरण। पंडित मरण चार प्रकार का है:

A. i) सम्यक्त्व मरण : सम्यकत्व के छूटे बिना, होने वाला मरण।

ii) समाधि मरण : धर्मध्यान और शुभध्यान के साथ होनेवाला।

iii) पंडित मरण : (क) अपनी या दूसरों की सेवा स्वीकार करते हुए (भक्त-प्रत्याख्यान मरण) (ख) दूसरों की वैय्यावृत्ति स्वीकार नहीं करते हुए (इंगिनी मरण) (ग) अपनी या दूसरों की सेवा से अपेक्षा-रहित संलेखना से (प्रायोपगमन)। इसमें सब उपसर्गों को समतापूर्वक, बिना हिले-डुले सहन करते हुए मरण का वरण करते हैं।

iv) वीर मरण : धैर्य और उत्साह के साथ भेद-विज्ञान पूर्वक होने वाला मरण।

B. बाल मरण : मिथ्यादृष्टि जीवों का मरण बाल-मरण कहलाता है तथा असंयत सम्यग्दृष्टि का मरण बाल-मरण कहलाता है।

4. **संलेखना की विधि :**

a. संलेखना या समाधि का अर्थ एक साथ सब प्रकार के खाद्य पदार्थों का पूरे समय के लिए त्याग करके बैठ जाना नहीं है। अपितु उसका एक निश्चित क्रम है। उस क्रम का ध्यान/उपयोग रखकर ही संलेखना करनी होती है। इसका ध्यान नहीं रखने से साधक को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। कभी-कभी तो संयम से च्युत होने की नौबत आ सकती है। अतः साधक को किसी भी प्रकार की आकुलता न हो और वह क्रमशः अपनी काया और कषायों को कम (कृश) करता हुआ, देहोत्सर्ग की दिशा में आगे बढ़े, इसका ध्यान रखकर ही संलेखना की विधि बनाई गई है।

b. **साधक को—**

i) सर्वप्रथम अपने परिजनों एवं मित्रों से मोह, अपने शत्रुओं से बैर

तथा सब प्रकार के बाह्य पदार्थों से ममत्व का शुद्ध मन से त्याग कर, मिष्ट वचनों से अपने स्वजनों और परिजनों से क्षमा-याचना करनी चाहिए तथा अपनी ओर से भी उन्हें क्षमा कर देना चाहिए।

ii) उसके बाद कृत, कारित और अनुमोदित सभी प्रकार के पापों का छलरहित आलोचना कर मरणपर्यंत के लिए महाव्रतों को धारण करना चाहिए।

iii) उसके साथ ही उसे सब प्रकार के भय, शोक, संतप्त और अशुभ भावों का त्याग कर, अपने बल, वीर्य, साहस और उत्साह को बढ़ाते हुए, गुरूओं द्वारा सुनाई जानेवाली अमृतवाणी से अपने मन को प्रसन्न रखना चाहिए।

उपरोक्त कषाय कृश करने के तरीकों के साथ अपनी काया को कृश करने हेतु, सर्वप्रथम स्थल/ठोस आहार (दाल, भात, रोटी) आदि का त्याग करना चाहिए। तथा दूध, छाछ आदि पेय पदार्थों पर निर्भर रहने का अभ्यास बढ़ाना चाहिए। धीरे-धीरे जब इन पर निर्भर रहने का अभ्यास हो जाये, तब उनका भी त्याग कर मात्र गर्म जल ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार चित्त की स्थिरता के साथ अपने उक्त अभ्यास और शक्ति को बढ़ाकर अंत में जल का भी धैर्य-पूर्वक त्याग कर देना चाहिए। सबसे अंत में अपने व्रतों का निरतिचार पालन करते हुए नमस्कार मंत्र के स्मरण के साथ शांतिपूर्वक देह-त्याग करना चाहिए।

C. **सागारी संथारा** तो किसी भी परिस्थिति में इच्छापूर्वक विवेक रख कर लिया जा सकता है उतने समय के लिए सभी पाप-क्रियाओं का, आहार का व शरीर उपाधि का त्याग प्रत्याखान कर, यानि संयम धारण कर कोई भी मनुष्य इसकी साधना कर सकता है। यहाँ तक कि हर रात्रि को सोते वक्त इस साधना का कवच पहनकर सोया जा सकता है। केवल निम्नोक्त पाठ को इच्छापूर्वक पढ़कर ही संथारे की विरति ग्रहण की जा सकती है–

आहार, शरीर उपधि, पच्चक्खूं पाप अठार।
जब तक मैं बोलूं नहीं, एक बार नवकार।।

चूंकि विरत अवस्था में आत्मा की शक्ति केन्द्रीभूत होती रहती है, उस शक्ति से मन की शुद्धि शुरू हो जाती है। मन के नियंत्रण से पाँचों इन्द्रियों का निग्रह होता है। संवर और निर्जरा तत्व की पकड़ मजबूत होने लगती है। फलतः आत्म-शुद्धि की प्रक्रिया तेज हो जाती है। ऐसा अभ्यास हो जाने से मरणांतिक संलेखना का मार्ग सहज ही आसान हो जाता है।

इतना विवेक रखना जरूरी है कि संथारा लेने का स्थान शोर-शराबे से दूर, शांत व निर्दोष हो। इससे शुभ ध्यान में अवस्थित होने में सहायता मिलती है। क्योंकि विचारों का उद्गम बाहरी वस्तुओं पर आधारित रहता है और विचार ही कर्म-बंध का कारण होता है, अतः बाहरी वस्तु, जगह की पवित्रता का ध्यान रखकर उसका चुनाव करना बेहतर होगा।

d. **पंडित मरण** को धारण करने की योग्यता के लिए अच्छी ट्रेनिंग की आवश्यकता रहती है। एक साधक के लिए ऐसी समय-सारिणी एक साधु द्वारा बताई गई है–काया क्लेश (तपस्या) का अभ्यास –४ साल का, उसके बाद बिगय-त्याग द्वारा इंद्रिय निग्रह का अभ्यास–४ साल, इस अभ्यास के बाद उणोदरी तप का अभ्यास–२ साल। इस अभ्यास को अनुशासन पूर्वक कर लेने के पश्चात्, मृत्यु के समय, वह अपनी आंतरिक अवस्था (कषाय) और भविष्य के जीवन को नियंत्रित कर सकता है।

5. संथारे के गुण / विशेषताएँ

संलेखना आत्मोत्थान की दृष्टि से की जाती है। यह आत्मशुद्धि और प्रायश्चित का एक महान व्रत है। इस तप से भाव और बुद्धि की शुद्धि होती है। यह व्रत अंतिम घड़ियों में साधनाशील व्यक्ति को चिर शांति प्रदान करने का एक प्रबल साधन है। इसमें साधक सबसे क्षमा याचना करता है। तथा पूर्ण सावधानी के साथ अपने मन में किसी के भी प्रति मनोमालिन्य और विद्वेष नहीं रखता है।

परिणाम : संलेखना का आराधक अपने मन को शुभ ध्यान में लगाकर अपने पाप कर्मों की निर्जरा करता है। वह आत्मा को निर्मल करके परमात्मा की अवस्था में लाने में सक्षम बनता है। ऐसे पंडित-मरण की

योजना बनाना व समय पर वरण करना हर व्यक्ति के लिए संभव है। इसमें जाति या धर्म की कोई बाधा या भेदभाव नहीं है। संलेखना तप का सुरक्षा कवच पहन लेने से आराधक में प्रायश्चित द्वारा कषायों की पकड़ क्षीण होने लगती है, मन शांत व स्थिर रहने लगता है। नये पाप-कर्म का बंधना रूक जाता है तथा मन में शुभ ध्यान अवस्थित होने से पुराने कर्म क्षय होने शुरू होते हैं। ज्योतिर्मय मृत्यु का लक्ष्य सिद्ध होना प्रारम्भ हो जाता है।

जिस प्रकार वर्ष भर विद्यालय में अध्ययन करने वाला विद्यार्थी, यदि परीक्षा में नहीं बैठता, तो उसकी वर्षभर की पढ़ाई निरर्थक हो जाती है, उसी प्रकार जीवन भर साधना करते रहने के उपरांत भी यदि संलेखना पूर्वक मरण नहीं हो पाता है तो साधना का वास्तविक फल नहीं मिल पाता। इसलिए प्रत्येक साधक को संलेखना अवश्य करनी चाहिए। मुनि व श्रावक दोनों के लिए संलेखना जरूरी है। जिस प्रकार युद्ध का अभ्यासी पुरुष रण में सफलता प्राप्त करता है, उसी प्रकार पूर्व में किये गये अभ्यास के बल से ही आखिरी संलेखना की सफलता सुनिश्चित हो सकती है।

6. संलेखना के दोष

क) अधिक जीने की इच्छाः संलेखनाधारी साधक को अपनी सेवा शुश्रुषा होती देखकर अथवा अपनी इस साधना से बढ़ती हुई प्रतिष्ठा के लोभ में और अधिक जीने की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।

ख) कम जीने की इच्छाः मैंने आहारादि का त्याग तो कर दिया है, लेकिन मैं अधिक समय तक जिंदा रहा तो मुझे भूख-प्यास आदि की वेदना भी हो सकती है। अतः अब अधिक न जीकर शीघ्र ही मर जाऊँ तो अच्छा है। इस प्रकार मरण की आकांक्षा भी नहीं करनी चाहिए।

ग) भयः संलेखना धारण तो कर ली है, पर ऐसा न हो कि क्षुधा आदि की वेदना बढ़ जाये और मैं उसे सह न पाऊँ, इस प्रकर का भय मन से निकाल देना चाहिए।

घ) अनुरागः अब तो मुझे संसार से विदा होना ही है, किन्तु एक बार मैं अपने अमुक मित्र से मिल लेता तो बहुत अच्छा होता। इस प्रकार का भाव मित्रानुराग है। साधक को ऐसे अनुराग से बचना चाहिए।

ङ) निदानः मुझे इस साधना के प्रभाव से आगामी जन्म में विशेष भोग उपभोग की सामग्री प्राप्त हो, साधक को इस प्रकार के विचार या निदान से बचना चाहिए।

यदि साधक इस बार इन पाँचों अतिचारों से रहित होकर संलेखना पूर्वक मरण करता है तो वह अतिशीघ्र, एक या दो भव के अंतराल से ही भव-मुक्त हो जाता है। इतनी महत्वपूर्ण मानी गई है जैन साधना में मरणांतिक संलेखना। वस्तुतः समाधिमरण का अर्थ मृत्यु-कामना नहीं है, वरन् देह आसक्ति का परित्याग है।

7. संलेखना बनाम आत्मघात

क) देह त्याग की इस प्रक्रिया को ठीक से नहीं समझ पाने के कारण कुछ लोग इसे आत्मघात कहते हैं। परन्तु संलेखना कोई आत्मघात नहीं है। जैन धर्म में आत्मघात को पाप-हिंसा एवं आत्मा का अहितकारी कहा गया है। आत्मघात एक निंदनीय अपराध है। यह सही है कि आत्मघात और संलेखना, दोनों में प्राणों का विमोचन होता है। पर दोनों की मनोवृत्ति व लक्ष्य में महान अंतर है।

ख) आत्महत्या राग-द्वेष व मोहवृत्ति से प्रेरित होकर की जाती है। यह अत्याधिक निराशा एवं तीव्र मानसिक असंतुलन की स्थिति में की जाती है। उस क्षण में मनुष्य में आर्त्तध्यान का उदय होता है। जबकि संलेखना परम उत्साह, प्रसन्नतापूर्वक व आत्मचिंतन के साथ समभाव धारण करके, आहार आदि का क्रमशः परित्याग कर की जाती है। यानि आत्मघात कषायों से प्रेरित होकर क़िया जाता है, जबकि संलेखना का मूल आधार समता है।

ग) संलेखना जीवन के अंत समय में शरीर की अत्याधिक निर्बलता, अनुपयुक्ता, भारभूतता अथवा मरण के किसी अन्य कारण के आने पर मृत्यु को अपरिहार्य मानकर की जाती है, जबकि आत्मघात जीवन के किसी भी क्षण किया जा सकता है।

घ) संलेखना में परम उत्साह, निर्भीकता और वीरता का सद्भाव पाया जाता है जबकि आत्मघाती के परिणामों में दीनता, भीति और उदासी पायी जाती है।

ङ) संलेखना निर्विकार मानसिकता का फल है तो आत्महत्या विकृत चित्तवृत्ति का परिणाम है।

च) संलेखना का लक्ष्य देह-आसक्ति का परित्याग है तो आत्मघात का लक्ष्य मृत्यु कामना है।

छ) संलेखना का लक्ष्य जीवन को संवारना है तो आत्मघात का लक्ष्य जीवन को बिगाड़ना है।

विशिष्टता :- जो मरणान्तिक संथारा करते हैं, उनका आत्मा के उत्थान के प्रति सकारात्मक रूख रहता है। इसलिए इसको हिंसा की कोटि में समाविष्ट नहीं किया जा सकता है। इसमें शुभ कार्य करने की प्रवृत्ति का अभाव नहीं है। बल्कि उसमें सभी प्रकार के प्रमाद का यानि विषय, कषाय, विद्वेष, निद्रा, विकथा का सर्वथा अभाव रहता है।

एक विशेषता और है। अंतिम समय में संथारा लेने वाला गुणीजन न तो परलोक संबंधी सुख की आकांक्षा करता है, न अपनी प्रशंसा फैलने पर बहुतकाल तक जीवित रहने की इच्छा करता है। इसी तरह वह दुख से व्याकुल होकर शीघ्र मरने की भी इच्छा नहीं करता है। ऐसी सब इच्छाओं की आलोचना करता है। विवेकसहित समभाव से शुक्ल ध्यान में अवस्थित रहने का पूर्णयोग से प्रयास करता है।

आलोचना व प्रायश्चित द्वारा पाप कर्म की निर्जरा करके आत्मशुद्धि की तरफ अग्रसर होता है। वह जन्म-मरण के चक्र से बाहर निकलता है।

ज) संलेखना एक पवित्र, प्रशंसनीय और वीरोचित आत्मोत्थान का कार्य है, जबकि आत्मघात एक कायरतापूर्ण किया हुआ अधम कार्य है।

विशिष्टता :- जैसे कोई व्यक्ति समाजसेवा व राष्ट्रसेवा के लिए बलिदान देता है तो उस बलिदान को आत्महत्या की संज्ञा नहीं दी जा सकती है, वैसे ही जो व्यक्ति स्वशुद्धि और आत्मोत्थान के लिए अपना तन और मन धर्म-आराधना हेतु न्यौछावर कर देता है, तो उसके इस महान त्याग और तप को आत्महत्या की संज्ञा कदापि नहीं जी जा सकती है। इसको आत्महत्या मानना भयंकर अज्ञान व भूल होगी।

एक उदाहरण :- किसी गृहस्थ के घर में बहुमूल्य वस्तुएँ रखी हुई है और कदाचित् भीषण अग्नि से घर जलने लगे, तो वह उसे येन-केन-प्रकारेण बुझाने का प्रयास करता है। पर हर संभव प्रयास के बाद भी, यदि आग बेकाबू होकर बढ़ती ही रहे, तो उस विषय परिस्थिति में वह चतुर व्यक्ति अपने मकान का ममत्व छोड़कर, बहुमूल्य वस्तुओं को बचाने में लग जाता है। उस गृहस्थ को मकान का विध्वंसक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसने तो अपनी ओर से रक्षा करने की पूरी कोशिश की। किन्तु जब रक्षा असंभव हो गई तो एक कुशल व्यक्ति के नाते बहुमूल्य वस्तुओं का संरक्षण करना ही उसका कर्तव्य बनता है। इसी प्रकार रोगादि से आक्रांत होने पर एकदम से संलेखना नहीं ली जाती। साधक तो शरीर को अपनी साधना का विशेष माध्यम / साधन समझकर यथासंभव रोगादि का योग्य उपचार / प्रतिकार करता है, किन्तु पूरी कोशिश करने पर भी जब रोग असाध्य दिखता है और निः प्रतिकार प्रतीत होता है, तब उस विषम परिस्थिति में मृत्यु को अवश्यम्भावी जानकर, अपने व्रतों की रक्षा में उद्यत होता हुआ, अपने संयम की रक्षा के लिए समभावपूर्वक मृत्युराज के स्वागत में तत्पर हो जाता है।

समाधिमरण तो देहोत्सर्ग की तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और वैज्ञानिक पद्धति है, जिससे अमरत्व की उपलब्धि होती है।

8. **आधुनिक समाज में संथारे की वस्तु-स्थिति :-** साधारण संथारे का तथा मरणांतिक संथारे का प्राचीनकाल में काफी प्रचलन था। सच्चे कर्मयोगी तथा सुज्ञजन समय-समय पर साधारण संथारे की साधना करके आत्मशुद्धि का अभ्यास करते रहते थे। आज के युग में भी कई विशिष्ट व्यक्तियों, साधुओं व गृहस्थों के अंतिम संथारे द्वारा देहोत्सर्ग के समाचार सुनते रहते हैं। ऐसे महात्माओं के दर्शन कर व उनसे प्रेरणा पाकर हजारों, लाखों लोग धन्य होते हैं। दुराग्रह से ग्रसित लोगों को यह पावन अवसर अपनी वक्रबुद्धि को सीधा करने के लिए मिलता है। हालांकि वैसे कोई पक्के आंकड़े तो उपलब्ध नहीं है, लेकिन वर्तमान समय में समाचार पत्रों के व्यापक प्रसार और ज्ञान से ऐसे सुकृत कार्यों का व घटनाओं का समाचार

अब आसानी से व जल्दी मिल जाता है। फिर भी कुछ क्षेत्र ऐसे रह जाते हैं जहाँ ऐसे समाचार फैलाने के लिए साधन व परिश्रम का अभाव रहता है।

इस सूचनाओं के आधार पर ऐसा अनुमान है कि पंड़ित-मरण को वरण करने वाले वीरों की संख्या में निरंतर काफी तेजी आ रही है। जमशेदपुर जैसे शहर में भी पिछले कुछ वर्षों में जैन व जैनेत्तर समुदाय में कई प्रबुद्ध व्यक्तियों के मरणांतिक संथारे की आदर्श घटनाएँ हुई है। इस बढ़ते भौतिकवाद में भी शाश्वत सुखों की प्राप्ति के प्रयास जारी रखने वालों की संख्या में वृद्धि, हमारी संस्कृति की अनूठी विशेषता की परिचायक है। यह हमारी आध्यात्मिक खोज के निरंतर प्रयास को दर्शाती है। हम वीर साधकों को नमन करते हैं। उनका साधुवाद करते हैं।

पाड़ा का देवालय :

श्री सुभाष राय

पुरुलिया शहर से 30 कि. मी. की दूरी पर पाड़ा ग्राम बसा है। इसी गाँव में पुरुलिया की सबसे प्राचीन जैन संस्कृति के अवशेष के रूप में पत्थर से बना देवालय खड़ा है। काल की चपेट में मंदिर क्षय प्राप्त हो चुका है, जिससे आज उसका मूल रूप ही खो चुका है। प्राचीन मानभूम के इतिहास को टटोलने पर देखा जा सकता है कि अतीत में यह गाँव पंचकोट के राजाओं की राजधानी थी। 962 ई. के समयकाल में यह राजपरिवार पांचेत पहाड़ के पास उठकर चला आया। पाड़ा में इज़माएर नाम की जो विशाल पोखरी है, वह किसी प्राचीन राजा द्वारा प्रतिष्ठित की गई होगी। सम्भव है, कि पंचकोट राजाओं से पहले यहाँ मान राजाओं का शासन था। मान राजाओं के साथ पंचकोट के राजाओं की विरोधिता हुई। इससे मानराजाओं को स्थानान्तरित होना पड़ा। पंचकोट राजाओं की राजधानी के रूप में पाड़ा जाना जाता था। इसका प्रभाव गाँव के चारों तरफ बनी नाली को देखने से पता चलता है। फिलहल वह भी नष्ट हो चुकी है।

इस समय पाड़ा में तीन देवालय बने हुए है। इन पर नीचे अलोचना की जा रही है–

1) **ईंट का देवालय :** यही देवालय सबसे प्राचीन है। इसकी ऊँचाई लगभग 40 फुट है। ऊपर के आमलक अंश का काफ़ी सारा भाग नष्ट हो चुका है। ऊपर का कलश और ध्वजदंड भी लुप्त हो चुका है। लगता है पहले इसकी उच्चता 45 फुट की थी। यह एक रेख देवालय है। इसकी निर्माण शैली में ओडिसी प्रभाव सुस्पष्ट है। सबसे बड़ी बात है कि सम्पूर्ण मंदिर पर ही आलंकारिक सजावट की गई है। आज उसमें से कुछ ही बचा है, बाकी सब गल चुका है। बहुतों का कहना है कि यह मंदिर कोर्णाक के सूर्य मंदिर सा अलंकृत था। अगर संरक्षण किया जाता तो आज यह एक सर्वोत्त्कृष्ट पुरातात्विक आकर्षण होता है। परन्तु उससे पहले ही सब कुछ खत्म हो चका है।

अभी भी नृत्य कर रही नारी, अपेक्षारत नारी, यक्ष-यक्षणी, चलता हुआ घोड़ा, गंगा, यमुना, द्वारपाल, कमल की पंखुड़ियाँ, चार पंखुड़ियों वाला फूल, अतीत की कोई कहानी आदि को मंदिर पर उकेरा गया है।

इस देवालय की निर्माण प्रकृति लगभग बान्दा या तेलकूपी के मंदिर जैसा है, लेकिन यह आधा नष्ट हो चुका है, क्योंकि दूसरे देवालयों से यह अधिक प्राचीन है और इसके पत्थर तेलकूपी में प्रयोग किए प्रस्तरखंड़ों से अधिक नर्म है। हो सकता है, अलंकारणों के उकेरने की सुविधा के लिए ऐसे नर्म पत्थर इस्तेमाल में लाए गए हो। देवालय दक्षिण द्वार मुखी। द्वार पर कलाकारी से भरा कोई पत्थर का फ्रेम नहीं है। हो सकता है, पहले सामने की तरफ पत्थर का बरामदा हुआ करता था, जो आज नहीं है। पत्थर के बने विशाल स्तम्भ सारे नजर आते है। पाड़ा का यह देवालय जैनों द्वारा ही प्रतिष्ठित है। इसीकारण दूसरे देवालय जैसे इसके तीन तरफ तीन जगहें बनी हुई है। किसी तीर्थंकर या देवी-देवताओं की मूर्ति इनमें बहुत पहले रखी जाती थी, पर आज कुछ भी नहीं बचा है। प्रकोष्ठ के दोनों तरफ दो नारी मूर्ति चँवर हाथ में लिए खड़ी है। यह जैन स्थापत्य की एक विशेषता मानी जाती है। इसके साथ ही मंदिर पर नाना प्रकार के मनुष्य चेहरों को उकेरा गया है।

इस देवालय के ऊपर का आमलक शिला, पुरुलिया के दूसरे देवालयों की शिलाओं से काफी छोटा है। इसका बाकी अंश भी आकार में छोटा है।

2). **ईंट का देवालय :** पहले कहे गए देवालय से थोड़ी ही दूर पर यह देवालय बसा हुआ है। इसका भी ऊपर का अंश नष्ट हो चुका है। बचे हुए अंश की ऊँचाई करीब 45 फुट की है। इस देवालय की आकृति हुबहू देओलघाटा के देवालय से मिलती जुलती है। प्रवेश का द्वार त्रिकोणाकृति का है। पहले किसी समय चूने पर नाना प्रकार के आकृति और अलंकरण बनाए गए होंगे, पर अभी उसका थोड़ा सा ही अंश बचा हुआ है। फिर भी जितना बचा है, उसकी सुंदरता पर हमें मुग्ध होना पड़ता है। मंदिर के अलंकरण को शिल्पकारों ने छोटे-छोटे देवालयों के रूप को ईंटों के द्वारा प्रत्फुटित किया है। रथ देवालय की आकृति जैसे है, और देवालय की

अनुकृतियों को देवता की मूर्ति स्थापना के लिए व्यवहार में लाया गया है। लेकिन एकाधिक स्थानों के बीच वाला जगह ही सबसे बड़ा है।

पाड़ा के ईंट के देवालय में जैविक चूने के लेप पर फूल, पत्ते, मोतियों की माला, देवदेवी की मूर्ति, नक्शे आदि उकेरे गए हैं। शिल्पकारी के अनुपम उदाहरण के रूप में ताश के पत्ते जैसे चैत्य गवाक्ष को देखा जा सकता है। इन सबसे यह अनुमान किया जा सकता है कि देउलघाटा और पाड़ा के देवालय एक ही गोष्ठी के थे एवं लगता है वे समकालीन भी थे। दसवीं से ग्यारहवीं सदी के बीच वे रहे होंगे। इस समय पाड़ा के पत्थर से बने देवालय के भीतर कोई विग्रह नहीं दिखता, पर ईंट से बने देवालय के भीतर स्थित है एक षड़भुजा देवीमूर्ति। यह मूर्ति आकार में छोटी होते हुए भी एक गोल शिलापट पर खुदी हुई है। इस तरह की शिला तेलकूपी और भोगड़ा में नजर आती है। ये जैन देवी हैं, परन्तु इस समय में उदयचंडी के नाम से आम लोगों में पूजी जाती है। हर मंगलवार धूमधाम से देवी की पूजा होती है। दुर्गापूजा के समय हर नवमी को यहाँ मेला बैठता है।

3). **रघुनाथजी का मंदिर :** पाड़ा गाँव के भीतर पश्चिम छोर पर कुइरी मुहल्ले में ईंट और पत्थर से बना एक मझौले आकार का मंदिर है। बाहर से देखने पर दो मन्दिर जैसा हमें लग सकता है। मंदिर का नीचे से आधा अंश पत्थर का बना है और ऊपर का अंश ईंट से बना है। मंदिर के प्रवेशद्वार पर अर्धवृत्त आकार के पत्थर का दरवाजा नजर आता है। उसके सामने जो खुला अंश है, वह असल में बरामदा है। दोनों मंदिर के शीर्षभाग ईंटों से बने है। और बड़े से सूक्ष्म होते हुए वृत्त आकार में ऊपर की तरफ उठकर बिन्दु में पहुँचकर शीर्ष का निर्माण किया है।

थोड़ा सा भीतर जो अंधकार कमरा है, वही असल में मूल मंदिर है। वहाँ एक बड़ी वेदी स्थापित है। पहले इस पर कोई मूर्ति रही होगी पर आज वेदी खाली पड़ी है। इस मंदिर के दरवाजे के ऊपर एक शिलालेख है, परन्तु निरन्तर लोगों के अत्याचार के कारण इसे पढ़ पाना मुश्किल होगा। इसके उद्धार होने पर बहुत सारी बातें सामने आएँगी। फिलहाल यहाँ कृष्णा जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण की मूर्ति बनाकर पूजी जाती है।

अब मंदिर निर्माण के समयकाल पर आते है। दूसरे स्थानों की तरह, यहाँ भी कोई प्रामाणिक सत्र नहीं है। हमारा अनुमान है कि पाड़ा के पत्थर का देवालय नवीं सदी का है और देउलपाड़ा के अनुकरण में तैयार किए गए पाड़ा के ईंटवाले देवालय का समयकाल दसवीं से ग्यारहवीं शताब्दी है। राधारमण मंदिर देखने से लगता है कि ये हाल ही में बना हुआ है। ऐसा भी हो सकता है कि पहले उस स्थान पर दूसरा कोई मंदिर होगा, जो प्राकृतिक कारणों से टूट जाने पर यह मंदिर और उसके ऊपर का हिस्सा पत्थर के अभाव में ईंट से ही बनाया गया था। इस मंदिर ने एक द्विरत्न मंदिर का रूप अर्जित किया है। ऐसी कहावत है कि मानसिंह के समय पुरुषोत्तम दास ने ही मंदिर बनाया था।

जो भी हो, पाड़ा में आज कोई मूर्ति नजर आई। लगता है, सारी मूर्तियाँ हटा ली गई है। जे. डी बेगलार ने ईंट के मंदिर में दशभुजा दुर्गा की मूर्ति देखी थी। इस समय सब कुछ चला गया है। पुरुलिया से जिस हद तक मूर्तियाँ चोरी हुई है उसका कोई हिसाब नही है। दुःख की बात यह है कि इन्हें रोकने का भी कोई उपाय किसी के पास नहीं हैं।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराज चरित्र

इधर सूर्यवतीजी ने पुत्र के दैनिक कार्यों में विलम्ब करते देखा, तो उन्होंने कहला भेजा, पुत्र! आज देव पूजन भी अभी तक नहीं हुआ है और न भोजन ही हुआ है। अतः अब तुम्हें जल्दी आ जाना चाहिये। क्योंकि-

जो सुन्दर रूप को बिगाड़ने वाली, स्मरण शक्ति को नष्ट करने वाली, इन्द्रियों को मुर्झाने वाली, आँख, कान और ललाट आदि को मलिन और निर्बल करने वाली वैराग्य उत्पन्न कराने वाली, बंधुओं का त्याग कराने वाली, परदेश में ले जाने वाली, चारित्र और सतीत्व को भंग करने वाली पांच-भूतों का दमन करने वाली और प्राणों का नाश करने वाली है वह भूख बड़ी तेजी से पेट में खलबली मचा देती है।

श्रीचन्द्रजी संदेश लाने वाले सेवक को संकेत से ही समझा दिया कि आज बड़ी भारी मंत्रणा हो रही है अतः मैं आने में असमर्थ हूँ सो तुम जाकर माताजी से अर्ज करदो कि आप सब शीघ्र ही भोजन करलें। मेरेलिये तनिक भी इन्तजार न करें। मेरा रखा हुआ बीड़ा आज तक कभी निष्फल नहीं गया। इसलिए मैं जब तक यह मेरी प्रतिज्ञा पूरी न हो जायेगी तब तक भोजन नहीं करूंगा। गुणचन्द्र ने कहा, महाराज! आपको ऐसे वचन सहसा अपने मुख से नहीं निकालने चाहियें कारण कि न मालूम यह चोरी कितने दिनों बाद जाकर पकड़ी जावे।

यह सुनकर श्रीचन्द्र एकदम वहां से उठ खड़े हुए और उन राजाओं के साथ बगीचे में जाकर पैदल ही बन विहार करते हुए उस मठ के पास जा पहुँचे। वहां पर उन्होंने पांच छः योगियों के साथ पान खाये हुए उन तीनों चोरों को देखा। राजा श्रीचन्द्र ने मठ के सामने के चबूतरे पर बैठकर उन सभी योगियों को अपने पास बुलाया। वे सब वहां से चले आये और आशीर्वाद देकर बैठ गये।

आप लोगों में कौन-कौन योगी और कौन-कौन भोगी हैं? राजा ने पूछा? राजन्! हम लोग तो योगी हैं और आप भोगी हैं। योगियों ने उत्तर दिया। तो फिर यह पान की लालिमा आपके मुख में क्यों? राजा ने कहा।

यह सुन उन तीनों का मुँह काला पड़ गया। महाराज का संकेत पाकर गुण चंद्र ने उन तीनों को हिरासत में ले लिया साथ के मनुष्यों ने हुक्म पाकर उस मठ के पास की शिला को उठाकर दूर फेंक दिया, उसके नीचे एक विशाल और अद्‌भुत भूगृह था, उसमें अपार धन राशि भरी हुई थी। यह देख सभी श्रीचन्द्र के भोग्य, बुद्धि और परोपकारिता की प्रशंसा करने लगे।

इसके बाद श्रीचन्द्र ने उस चोरी के धन में जिस-जिस का धन था उन सब को पहचान-पहचान कर दे दिया। उन तीनों चोरों को राजा जितशत्रु के हवाले करके और बाकी बचे हुए धन को लेकर अपने निवासस्थान पर लौट आया।

इधर राजा जितशत्रु ने उन चोरों को खूब निर्दयता से पिटवाया, परन्तु उन्होंने लेश मात्र भी अपना अपराध स्वीकार नहीं किया। अन्त में राजा ने उनके पास चोरी से सम्बन्ध रखने वाली कुछ वस्तुएँ और कुछ चिन्ह आदि देखकर उन्हें मृत्यु दण्ड की आज्ञा दे दी। सिपाही उन्हें लेकर वध्यभूमि में शूली के पास पहुँचे।

जब श्रीचन्द्र को इस बात का पता लगा तो उन्होंने उन चोरों को वहाँ से अपने पास बुलाया, और पूछा कि बताओ तुम लोग कौन हो? और तुम्हारे क्या-क्या नाम हैं? इस पर उन्होंने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। तब कुमार ने कहा, लोहखर! क्या तुम मुझे नहीं जानते? महेन्द्रपुर की सीमा में मैंने तुमको पुत्री समेत दया करके जिन्दा छोड़ दिया था। मैं अवस्वापिनी विद्या जानता हूँ। क्या वह मुझे तुमने नहीं दी थी? क्या तुम रत्न खर नहीं हो? राजा ने दूसरे से पूछा। पहले खाये हुए आम के फल तुम्हें याद नहीं हैं? अब जल्दी बताओ यह तीसरा कौन है और इसका क्या परिचय है?

इतना सुनते ही वे तीनों उनके चरणों पर गिर पड़े और गिड़गिड़ा कर माफी माँगने लगे। बादमें चोरों ने अपना वक्तव्य शुरु किया, राज़न् ! लोहजंघ इस नामका एक बड़ा मशहूर चोर हो गया है। उसके तीन पुत्र हैं। एक रत्नखर, लोहखर, और वज्रखर। ये तीनों कभी कुण्डलपुर में, कभी महेन्द्रपुर में, कभी पहाड़ों में, कभी नदियों के कगारों की खोहों में निवास करते हैं। वज्रखर के पास तालोद्धाटनी विद्या थी परन्तु उसके मरने के बाद वही विद्या उसके पुत्र वज्रजंघ को प्राप्त हुई। रत्नखर को पिता ने अपना सब से छोटा पुत्र समझकर अदृश्यगुटिका दी थी। लोहखर मैं हूँ ही। इस प्रकार मैंने आपने समक्ष हमारा सारा वास्तविक हाल कह सुनाया है, अब आज से आप ही हमारे स्वामी है।

महाराज श्रीचंद्र गुणी थे, गुणियों का आदर करते थे। उन्होंने विद्यागुण संपन्न उन चोरों को जीवन-दान किया। अपने सत्संग से उनको भी वीतराग मार्ग के अनुयायी बनाये। अपने प्रयाण में उन्हें भी साथ ले लिया। क्रमशः महेन्द्रपुर में पहुँचकर वहाँ की उस चौर गुफा से धन निकालकर जिसका था उसको दे दिया। राजकुमारी सुलोचना के साथ बड़े ठाठ से ब्याह भी कर लिया।

प्रधान मंत्री गुणचंद्र को चौदह राजाओं के साथ कांपिल्य-पुरसे सेना आदि को लाने के लिये भेजा। साथ-साथ चलने वाले श्रीलक्ष्मण, सुधीराज, सुंदर और बुद्धिसागर नाम के मंत्रियों ने आगे जाकर महाराजा प्रतापसिंह को बधाई दी। उन्होंने कहा कि महाराज! आपके चिरंजीवी कुमार श्रीचन्द्रजी अपनी माता भाई और रानियों के साथ आपकी सेवा में आ रहे हैं। महेन्द्रपुर से तिलकपुर, रत्नपुर और सिंहपुर होते हुए यहां पहुँचेगे।

इधर से गुणचन्द्र ने कुमार को कहलाया देव! आपके द्वारा छोड़ा हुआ गंध हाथी दूसरे के काबू में नहीं आ रहा है। यह जानकर महाराज श्रीचन्द्र अकेले वहां पहुँचे। उनके प्यार भरे वीर-वर्त्ताव को देखकर हाथी पानी पानी हो गया।

गजारूढ कुमार अपने मित्र गुणचन्द्र के साथ अपनी चन्द्रमुखी-चन्द्रलेखा आदि रानियों को एवं राजा वीर वर्मा के परिवार को लेकर महेन्द्रपुर लौट आये। वहां के राजा त्रिलोचन को साथ लेकर मार्ग में आने वाले राजाओं से आदर पाते हुए वे वसन्तपुर पहुँचे। वहाँ का राज्य वीरवर्मा को देकर वे कुछ दिन वहां ठहरे।

पत्रों द्वारा बुलाये हुए, और स्वेच्छा से आये हुए राजा लोग वहां एकत्रित हुए। श्रीचन्द्र राजमुकुट-कुण्डल-छत्र चामर आदि राज्य-चिन्हों से अलंकृत होकर अपने उस गंधहाथी पर सवार हुए ऐरावत–स्थित इन्द्र के समान चलते हुए तिलकपुर पहुँचे।

तिलकपुर के राजा तिलकसेन ने कुमार का भारी स्वागत किया। इधर से पुत्र का आगमन सुनकर महाराजा प्रतापसिंह अपने भारी लवाजमे के साथ कुशस्थलपुर से निकल पड़े। सेठ लक्ष्मीदत्त भी राजा की आज्ञा को शिरोधार्य करके आठ व्यवहारियों के कुटुम्ब के साथ सामान तैयार करने के लिये रत्नपुर में गया।

गुप्तचरों से पिताजी पधार रहे हैं, ऐसा जानकर श्री चन्द्रराज सारे दलबल के साथ पितृ–मिलन के लिये सामने आये दूसरे दोनों एक दूसरे के बाजों को सुनकर आनन्दित हुए। सेना की अग्रिम टुकड़ियों ने एक दूसरे के राज्य–ध्वजों के दर्शन किये। कुछ आगे बढ़ने पर कुमार की दृष्टि महाराज प्रतापसिंह के हाथी पर पड़ी। कुमार अपनी सेना को पंक्तिबद्ध बनाकर पिता का फौजी स्वागत करने के लिये, आगे बढ़े। महाराज प्रतापसिंह हाथी से उतर पड़े। कुमार श्रीचन्द्र ने बड़े विनीत भावसे पिता के चरणों में प्रणाम किया। पिता ने बड़े प्यार से अपने वीर शिरोमणि बेटे को हृदय से लगाकर अनेकों हार्दिक भाव भरे आशीर्वाद दिये। दोनों फौजों का परस्पर में प्रेम स्वागत हुआ।

महाराज का संकेत पाकर सेवकों ने रत्नजड़ाउ सुवर्ण सिंहासन लगा दिया। क्षण भर में वह स्थान पारिवारिक सभा के रूप में परिणत हो गया। सिंहासन पर महाराज ने अपनी गोदी में कुमार को बिठाकर असीम प्यार

किया। महारानी सूर्यवती ने भी महाराज के दर्शन कर अपनी चिर-वियोग-व्यथा को शान्त की। सबकी आंखों में हर्ष के आंसू थे। हृदय गद्-गद् हो रहे थे। सारी बहुओं ने अपने सास ससुर को भक्ति भाव से प्रणाम किया सबने आशीर्वाद पाकर अपने को कृतार्थ माना। जंगल में मंगल हो गया।

विजित और संबंधित राजाओं ने अपनी इज्जत के अनुरूप महाराजा की भेटें की। सबका परिचय कराया गया। लक्ष्मण और विसारह आदि मंत्रियों ने कनकपुर और कुण्डलपुर राज्यों की भेटें अर्पण की।

कुमार श्रीचन्द्र ने अपना अपूर्व कड्ग, सुवर्गपुरुष, पारसमणि, और अनमोल रत्न, घोड़ों सहित सुवेग रथ गंधहाथी आदि सारी वस्तुएँ पिता के समक्ष हाजिर की।

सासुओं ने सौतों ने सैन्श्री आदि सखियों ने परस्पर में एक दूसरे को नमस्कार कर यथोचित रीतिरिवाज संपन्न किया। एक दूसरे के कुशल समाचारों से अवगत होकर महाराजा प्रतापसिंह ने कुमार मित्र गुणचन्द्र के मुंह से श्रीचन्द्र के चरित्र को बड़े चाव से सुना। बहुत-बहुत आनन्दित हुए। कुमार ने अपने छोटे भाई वरवीर को पिता की गोद में लिटा दिया। बाद में महाराज ने भी महारानी के वियोग की, अवधूत मिलन की बातें कह सुनाई। अवधूत का नाम लेते समय महाराज के हृदय में एक टीस सी चलती थी। उसने मेरे प्राण बचाये, मैं कुछ नहीं कर सका इस बात का खेद जाहिर करने लगे।

कुमार ने हँसते हुए कहा पिताजी आपकी दया से उसका सब जगह कल्याण ही कल्याण होगा। उसका भविष्य चमक उठेगा। आप उसकी चिंता न करें।

वर्तमान की अवस्था प्रायः भूतकाल के कार्यकलापों पर अवलम्बित होती है। उन्हीं कार्य-कलापों से पैदा होने वाले सूक्ष्माति सूक्ष्मतम संस्कारों को हम भाग्य, दैव, विधि, कर्म, तकदीर और नसीब रूप में मानते हैं। उनमें जो शुभ होते हैं उन्हें पुण्य, और अशुभ होते हैं उन्हें पाप रूप मानने की परिपाटी चली आ रही है। पुण्य-पाप रूप कर्म आत्मा और जड़ द्रव्य दोनों के संबंध से हुआ करते हैं। दुःख, पाप-कर्मों का फल और सुख, पुण्य कर्मों

का फल माना जाता है। इनका नियंत्रण काल, स्वभाव, नियति, और पुरुषार्थ से हुआ करता है। इन्हीं को शास्त्रों में पांच समवाय नाम से बताया है। अच्छी और बुरी दोनों अवस्थाओं के कर्ता धर्ता हमारे लिये हम खुद ही हैं। परमेश्वर खुदा या गोड़ नामकी कोई दूसरी महाशक्ति का इसके साथ कोई सीधा संबंध नहीं होता।

हमारा चरित्र-नायक कुमार श्रीचन्द्र भी अपने ही पुण्य-कर्मों से जीवन का विकास करता हुआ सुखी, और सम्पन्न हो गया था। अनुकूल काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत-कर्म और पुरुषार्थ के समवाय से ही कार्य सिद्धि हो सकती है। कुछ न होते हुए भी सब कुछ बन जाने का नाम ही तो कार्य सिद्धि है।

तिलकपुर की सीमा में महाराजाधिराज प्रतापसिंह को उनकी प्रियतमा महारानी सूर्यवतीजी अपने परम प्रतापी पुत्र कुमार श्रीचन्द्रराज के साथ मिली। पिता पुत्र के उस सुखदायी मिलन से सर्वत्र आनंद ही आनंद का अनुभव होने लगा। संबंधितव्यक्तियों को उनकी यथा योग्य सेवा का सिरोपाव दिया गया। जंगल में मंगल हो गया।

उधर तिलकपुर के राजा तिलकसेन राधावेध साधना के समय से कुमार श्रीचन्द्र को चाह रहे थे। आज उन्हें पता लगा कि वे कुमार ही अपने प्रतापी पिता महाराज प्रतापसिंह के साथ अतर्कित रूप से हमारी सीमा में आ गये हैं। उल्लसित मन से उन्होंने भी वहां पहुँचकर महाराज से तिलकपुर आने का निमंत्रण किया। उनके अनुरोध से महाराजा अपने चिरंजीवी के साथ बड़े भारी स्वागत समारोह से तिलकपुर में पधारे। तिलकसेन की राजकुमारी तिलक मंजरी ने श्रीचन्द्रराज के गले में वरमाला डाली। महाराजा प्रतापसिंह ने अपने पुत्र का विवाह बड़ी धूमधाम से किया।

इस प्रसंग में रत्नपुर से लक्ष्मीदत्त सेठ और लक्ष्मीवती सेठानी भी वहां पर आये। कुमार ने उनको माता पिता के रूप में ही मान्यता प्रदान की। उन दोनों माताओं और पिताओं के एवं पुण्यशाली कुमार श्रीचन्द्र के हृदय में उस समय अनंत आनंद का समुद्र उमड़ पड़ा। उसी समय वहां कुमार के

नानाजी दीपशिखा के अधिपति राजा दीपचंद्रदेव और सिंहपुर के स्वामी श्वसुर शुभभांग नरेश भी वहाँ आ पहुँचे। सबके मनोरथ सफल हो गये।

विवाह के बाद कुमार श्रीचन्द्रराज वहां से तिलक नरेश एवं अपने माता पिताओं के साथ रत्नपुर की ओर रवाना हुए। रास्ते में जहां पिता से प्रथम बार मिलन हुआ था, वहां प्रियमेलक नाम का नगर बसाया। कुछ आगे बढ़कर समुद्र के किनारे पर अपने पिता महाराजा के नाम से प्रताप नगर बसाया। उन्हीं के नाम से सोने चांदी के सिक्के चलाये।

इधर कर्कोटक द्वीप के स्वामी रविप्रभ का पुत्र कनकसेन अपनी कनकसेना आदि नव बहिनों के साथ समुद्र मार्ग से वहां आया। उसने महाराजा प्रतापसिंह से अपना परिचय देकर प्रार्थना की कि-देव उमा और खर्परा नाम की जोगणियों से गवाते हुए आपके प्रतापी कुमार श्री चन्द्रराज के गुणों से आकुष्ट हुए ये मेरी बहिने स्वयंवरा होकर पिताकी आज्ञा से यहां आई हैं। हमारी इन बहिनों का विवाह यहां सम्पन्न होना चाहिए। महाराजा ने प्रसन्नता से अनुमति प्रदान की और वहीं उन कन्याओं के साथ श्रीचन्द्रराज का विवाह बड़े ठाठ से कर दिया।

उस समय दहेज रूप में दश हजार हाथी, तीस हजार घोड़े, एक करोड़ पैदल सेना और अपरिमित सोना चांदी मणि रत्न आदि कर्कोटक द्वीप से लाई हुई सारी दहेज सामग्री कुमार को प्रदान की गई। अद्भुत गुण और सौन्दर्य शालिनी उन कन्याओं ने अपने सास श्वसुर के पावां धोक दी। समस्त सामाजिक रीति रिवाज संपन्न हुये।

वार्ता के प्रसंग में महाराजाने उस उपकारी अवधूत की चर्चा छेड़ दी। कुमार कुछ बहाने से बाहर जाकर अवधूत का वेश बनाकर आ गया। महाराजा अवधूत को देखकर खुश हो गये। धीरे-धीरे अवधूत ने अपनी दाढ़ी हटाई कुमार को पहिचान कर कहा कि अरे बेटा! क्या अवधूत भी तुम्ही है। तेरी लीला अपरंपार है। तब उसने सारी घटना का वर्णन किया। सुनकर सारा राजन्य परिवार और अन्तःपुर दांतो तले उंगली दबाने लगा।

इस प्रकार नित नये विनोदों को करते हुए कुमार महाराज के साथ कुशस्थलपुर पधारे। पुरवासियों ने कुमार के सद्गुणों और सच्चरित्रों से प्रसन्न होकर अनेक उत्सव समारोह किये। इस प्रकार कुशस्थलपुर में अमोद प्रमोदों का एक विशाल कार्य क्रम हो गया। महाराजा ने एवं सारी राज-सभाने कुमार के अलौकिक चरित्र को गुणचंद्र के मुख से सुनकर ये सब पूर्वकृत पुण्य-कर्मों के ठाठ हैं, कहते हुए बड़ा आनन्द अनुभव किया।

इधर भील्लराज मल्ल ने भी कुमार को प्रणाम किया उसे वासुतिका की रक्षा का अधिकारी बनाया गया। राजा शुभगांग की प्रार्थना से महाराजा की आज्ञा से कुमार एक रोज सिंहपुर पधारे। गुणचन्द्र वहां साथ ही था। वहां उसके पूर्व जन्म की जन्मभूमि थी। उसे देखकर वह मूर्छित हो गया। कुमार ने उसे सावधान किया और उससे उसके पूर्व जन्म का सारा हाल सुना। सब को इस बात का पता चला कि निमित्त देखने वाला धरण ही गुणचंद्र है। इसने पूर्वभव में तीर्थों का आराधन कर उस पुण्य द्वारा की हुई हत्या के पापसे छुटकारा पाकर इस रूप में जन्म पाया।

गुणचंद्र की पत्नी कमल श्री को भी जाति-स्मरण हो आया। मैं पहिले जन्म में धरण की पत्नी श्रीदेवी थी। दूसरे भाव में जिनदत्ता हुई, और यह तीसरा भव कमलश्री का हुआ। लोगों ने उनके चरित्रों को सुनकर तीर्थों की महिमा परमेष्टी महामंत्र का प्रभाव मुक्त-कण्ठ से गाया। राजा शुभगांग ने अपनी पुत्री चंद्रकला और श्रीचंद्रराज को उस समय नहीं दिया गया दहेज अपूर्व ढंग से दिया।

क्रमशः

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2236-8523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone:
2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Stop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO.4. TITTHAYARA July 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225